

दिव्यांग शैतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई



"मैं ऐसा मानता हूँ की परमात्मा भी
ऐसे माता-पिता के घर
दिव्यांग बच्चे को पैदा करते है
जो अपने सपने
उस बच्चे की सेवा में
न्योछावर करने की ताकत रखते है ।"
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी



"हर दिव्यांग व्यक्तिको
राष्ट्र विकास और दिव्यांग विकास के
लिए जागृतता दिखाते हुए
अपना मतदान करना चाहिए।"

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निशमय हेल्थ पॉलिसी की जानकारी देकर फॉर्म भरते हुए ऊँकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के कार्यकर



केन्द्र सरकार द्वारा दिव्यांगों के उत्कर्ष हेतु चलाई जा रही निशमय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटीज़्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टीपल डिसेबिलिटी (Cerebral Palsy, Autism, Mental Retardation, Multiple Disability) से असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रु. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इन्श्योरेन्स मिल सकता है। (निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

- सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र (ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरूरी है)
- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशन कार्ड की प्रमाणित कॉपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशन कार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हों तो)
- बैंक पास बुक की फोटो कॉपी (बैंक के IFSC कोड के साथ)
- उम्र का प्रमाण (वोटिंग कार्ड अथवा जन्म प्रमाण-पत्र अथवा विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र)

यह प्रीमियम
ऊँकार फाउन्डेशन
ट्रस्ट द्वारा
भरा जाएगा

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

प्रेरणास्त्रोत और संपादक :

संतश्री अंकरुषि प्रितेशभाई

सह-संपादक :

मिहिरभाई शाह

(M) : 9724181999

संपर्क-सूत्र :

अंकार फाउंडेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/ Ahmedabad

ई - ७२, आयोजननगर सोसायटी,

श्रेयस क्रोसिंग के पास,

वासणा, अहमदाबाद.

(M) 9974955365,
9974955125

मुद्रक :

प्रिन्ट विजन प्रा.लि.

आंबावाडी बाजार,

अहमदाबाद-६.

फोन: (079) 26405200

जुलाई : २०१७

पृष्ठ संख्या : १६

वर्ष : ०१

अंक : ७

सहयोग शुल्क : रु. १ /-



संपादकीय

भारत देश में करोड़ों की संख्या में दिव्यांगजन रहते हैं और प्रतिदिन दिव्यांग लोगो की संख्या बढ़ती जा रही है। आज के समय में मस्क्युलर डिस्ट्रोफी नामक एक खतरनाक बीमारी ने अपना सकंजा फैला रखा है और कई लोग इसका बहुत ही बुरे

तरीके से शिकार है।

यह आनुवांशिक प्रकार की बीमारी है, इसलिए उसके सामने लड़ना अनिवार्य हो चुका है।

“दिव्यांग सेतु” मेगेजिन के इस अंक में हमारा उद्देश्य इस भयंकर बीमारी “मस्क्युलर डिस्ट्रोफी” के खिलाफ लोगो में ज्यादा से ज्यादा जागृतता लाना है। इस अंक में आप “मस्क्युलर डिस्ट्रोफी” के लक्षण, कारण एवं उपलब्ध चिकित्सा के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

मैं हमेशा यह कहता रहा हूँ और मानता रहा हूँ की, हम सब लोगो को अपने अधिकार और फरज के प्रति हमेशा सजाग रहेना चाहिए। “दिव्यांग सेतु” मेगेजिन के माध्यम से देश के सभी दिव्यांगजनो को मैं एक नम्र निवेदन करना चाहूँगा की आप लोगो को अपने मताधिकार का उपयोग आपके सभी अधिकार प्राप्त करने के लिए करना चाहिए।

भारत सरकार दिव्यांगजनों के लिए जो उत्तम कार्य कर रही है इसलिए मैं भारत सरकार एवं हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी जी का तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

जय हिन्द.... जय दिव्यांग

अंकार फाउंडेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी समुदाय की ऑर से जनवरी से जून मास के "दिव्यांग सेतु" मेगेजिन का श्रेष्ठतम संकलन बदल श्री ज्योतिबेन मोलासरिया धुप्पड़ का खूब खूब आभार मानते हैं।

- संतश्री अंकरुषि प्रितेशभाई

दिव्यांग सेतु

मस्क्युलर डिस्ट्रोफी



परिभाषा

पेशीय दुर्विकास (मस्क्युलर डिस्ट्रोफी) का शाब्दिक अर्थ होता है शक्ति क्षीण होना या पेशीय अपक्षय। पेशीय दुर्विकास आनुवांशिक रोगों का समूह है जिसमें क्रमिक अंदाज में कमजोरी आती जाती है। और गति को नियंत्रित करने वाली कंकालीय पेशियां (स्केलेटल मसल्स) छीजती जाती हैं। कई तरह के पेशीय दुर्विकास होते हैं। उनमें से कुछ जन्म के समय दिखाई पड़ जाती हैं और उन्हें जन्मजात पेशीय दुष्पोषण कहा जाता है जबकि कुछ अन्य पेशीय दुष्पोषण या दुर्विकास किशोरावस्था में विकसित होते हैं। पेशीय दुर्विकास की शुरुआत चाहे जब भी हो लेकिन उनमें से कुछ चलने-फिरने की असमर्थता या यहां तक कि लकवा पैदा करती है।

लक्षण

मांसपेशियों की डिस्ट्रोफी का मुख्य संकेत प्रगतिशील मांसपेशियों की कमजोरी है। मांसपेशियों की डिस्ट्रोफी के प्रकार पर निर्भर करते हुए विशिष्ट लक्षण और लक्षण विभिन्न आयु और अलग-अलग मांसपेशी समूहों में शुरू होते हैं।

डचेन मस्क्युलर डिस्ट्रोफी

डचेन एम.डी. मुख्य रूप से लड़कों में होती है और पेशीयतंतुओं की अखंडता को नियंत्रित अक्षुण्ण रखने वाली प्रोटीन डिस्ट्रोफिन को नियंत्रित करने वाली जीन के उत्परिवर्तन का नतीजा होती है। इसकी शुरुआत उसे 5 साल की उम्र में होती है और बहुत तेजी से बढ़ता है। अधिकतर लड़के 12 की उम्र में चलने-फिरने में असमर्थ हो जाते हैं और 20 साल की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते सांस लेने के लिए उन्हें श्वास यंत्र की आवश्यकता पड़ जाती है। उसके लक्षण आमतौर पर 2 और 3 की उम्र के बीच दिखाई देते हैं।

- बार-बार गिर जाता है
- बैठे स्थिति से उठना मुश्किल
- चलने और कूदने में समस्या
- डगमगाती चाल
- पैर की उंगलियों पर चलना
- मांसपेशियों में दर्द और कठोरता
- सीखने की अयोग्यता



बेकर मस्क्युलर डिस्ट्रोफी

डचेन मस्तिष्क डिस्ट्रोफी के समान हैं, लेकिन आमतौर पर हल्के होते हैं और धीरे धीरे आगे बढ़ते हैं। लक्षण आमतौर पर किशोरावस्था में शुरू होते हैं।

अन्य प्रकार की मांसपेशियों की डिस्ट्रोफी

कुछ प्रकार की मांसपेशियों की डिस्ट्रोफी को एक विशिष्ट विशेषता से परिभाषित किया जाता है या जहां शरीर के लक्षण पहले शुरू होते हैं। उदाहरणों में शामिल:

मायोटोनिक: मायोटोनिक एमडी अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग उम्र में प्रकट होता है और इसमें उंगुलियों और चेहरे की पेशियों में मायोटोनिया (विलंबित पेशी आकुंचन) और अस्थिर पैर, ऊंचे कदम उठा कर चलने की चाल, मोतियाबिंद, हृदय विकार, और अंतःस्त्रावी विक्षोभ-जैसी तकलीफें होती हैं। मायोटोपिक एमडी से पीड़ित व्यक्तियों के चेहरे लंबे होते हैं और पलकें भिची रहती हैं। पुरुषों में आगे की तरफ का गंजापन आ जाता है।

फैसिओस्केपुलोहिमरल (FSHD): किशोरावस्था में प्रकट होता है और चेहरे और हाथ-पैरों की कुछ विशेष पेशियों में सिलसिलेवार कमजोरी पैदा करती है। यह धीमे-धीमे बढ़ता है और इसमें हल्के पेशीय दुष्पोषण से लेकर विकलांग तक के लक्षण पैदा करता है।

जन्मजात: यह प्रकार लड़कों और लड़कियों को प्रभावित करता है और जन्म के समय या उम्र से पहले स्पष्ट होता है। कुछ रूप धीरे-धीरे प्रगति करते हैं और केवल हल्के अपंगता का कारण होते हैं, जबकि अन्य तेजी से प्रगति करते हैं और गंभीर हानि पैदा करते हैं।

क्या कोई इलाज है ?

विभिन्न मस्क्युलर डिस्ट्रोफी का कोई खास इलाज नहीं है। पीड़ादायक पेशीय आकुंचनों को रोकने के लिए प्रायः भौतिकोपचार का सहारा लिया जाता है। और कुछ तरह के एमडी के रोगियों के दर्द पर नियंत्रण रखने और पेशीय क्षय को रोकने के लिए कुछ निर्धारित दवाइयां दी जाती हैं। सहारा देने के लिए विकलांग उपकरणों का इस्तेमाल किया जा सकता है जबकि कुछ मरीजों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए विकृति निवारण विकलांग शल्यचिकित्सा की जाती है। कुछ मरीजों को जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है। श्वसन चिकित्सा की अनावश्यकता होती है और अंततः हृदय विकारों के लिए पेसमेकर की जरूरत पड़ सकती है।

कारण

कुछ जीन प्रोटीन बनाने में शामिल हैं जो मांसपेशियों के फाइबर को नुकसान से बचाते हैं। मस्तिष्क की नसों में ये होता है कि इनमें से एक जीन दोषपूर्ण है। मस्तिष्क की प्रत्येक प्रसूति में इस तरह के रोग के लिए आनुवंशिक उत्परिवर्तन के कारण होता है। इन म्यूटेशनों में से कई विरासत में हैं। लेकिन कुछ माता-पिता के अंडा या विकासशील भ्रूण में सहज होते हैं और अगली पीढ़ी को पारित किया जा सकता है।

जोखिम के कारण

मस्क्युलर डिस्ट्रोफी दोनों लिंगों और सभी उम्र में होती है। हालांकि, सबसे आम प्रकार, ड्यूसेन, आमतौर पर युवा लड़कों में होता है मांसपेशियों की डिस्ट्रोफी के परिवार के इतिहास वाले लोग, रोग विकसित करने उनके बच्चों के सर पर अधिक जोखिम रहता है ।

जटिलताएँ

मांसपेशियों की कमजोरी की जटिलताओं में शामिल हैं:

- चलने में असमर्थता :- मांसपेशियों के विकार वाले कुछ लोगों को अंततः एक व्हीलचेयर का उपयोग करने की आवश्यकता होती है।
- जोड़ों के आसपास मांसपेशियों या नलिकाएं छोटा करना :- संविदाकार गतिशीलता को आगे बढ़ा सकते हैं
- साँस की परेशानी :- कमजोर श्वास से जुड़ी मांसपेशियों को प्रभावित कर सकती है। मांसपेशियों की डिस्ट्रोफी वाले लोगों को अंततः एक श्वास सहायता यंत्र (वेंटीलेटर) का उपयोग करना चाहिए, शुरू में रात में, लेकिन संभवतः दिन में भी।
- घुमावदार रीढ़ (स्कोलियोसिस) :- कमजोर मांसपेशियां सीधे रीढ़ की हड्डी को पकड़ने में असमर्थ हो सकती हैं

1. टेरी गार

लेवुड, ओहियो से एक प्रसिद्ध अभिनेत्री है। एक सुबह, जब वह नियमित रूपसे जोगिंग कर रही थी तब अचानक ठोकर खाई और उसी समय गिर गई, उसने सोचा की वह फिसल गई है, लेकिन उसकी पेशीय विकृति के लक्षण उसके दाहिने पैर पर शुरू होने के कारण वो गिर गई थी, थोड़े समय के बाद उसे पता चला की वह अपने शरीर की अधिकतर मांशपेशीओ के बिगाड से जुज रही थी। ३३ वर्ष की आयु मे उन्हें ओस्कार पुरस्कार में नामित किया गया था।



2. अल्फ्रेडो फेरारी

अल्फ्रेडो फेरारी एक इटालियन ऑटोमोबाइल इंजिनियर और ओटोमेकर एंजो फेरारी के बेटे थे। अल्फ्रेडो को डचेन मस्क्युलर डिस्ट्रोफी था।



छोटी उम्र में ही अल्फ्रेडो को स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड रहा था। उनकी शारीरिक गतिविधिया धीरे-धीरे कठोर हो गई और वह अक्सर अपने संतुलन को बनाए रखने में असमर्थ हो गए थे।

अपने जीवन के आखिरी दिनों में अस्पताल में भर्ती होने पर, उन्होंने साथी इंजीनियर विटोरियो जानो के साथ इंजन तकनीकी विवरण की चर्चा की। अल्फ्रेडो ने उस इंजन को कभी नहीं देखा, जिसकी चर्चा उसने साथी इंजीनियर के साथ की थी। 24 जून 1956 को मोडेना में 24 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई।

"दिव्यांग सेतु" मेगेजिन निःशुल्क प्राप्त करने के लिए आप अपना पूरा नाम , पता , मोबाईल नंबर और इ-मेल आई -डी "अँकार फाउन्डेशन ट्रस्ट" के पते पर भिजवाए।

दिव्यांग सेतु

एक अनोखी पहल

रक्षाबंधन :
मानसिक
दिव्यांगजन,
कैदियो और वृक्ष
को बांधी राखी



भारत के हर परिवारों में रक्षा बंधन उमंग का उत्सव होता है, लेकिन परिवार से दूर रहते लोग भी इस त्यौहार में शामिल हो ऐसी श्रेष्ठ सोच के साथ पालारा जेल, मानसिक स्वास्थ्य केंद्र, रामदेव सेवाश्रम, महिला कल्याण केंद्रों में संस्थाओं

द्वारा राखी का त्यौहार मनाया गया, तो वृक्षको भी राखी बांधकर पर्यावरण की रक्षा के लिए प्राथना की गई। भूज मे पालारा जेल मे कैदी भाईओ को उनकी बहनोने राखी बांधी । उनके गुनाह की सजा का प्रायश्चित करते हुए कैदी भाईओ से जेल मे एक भावुक सा वातावरण बन गया।



दिव्यांग शैतु

दिव्यांग उत्कर्ष



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी जी द्वारा १८,५०० दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण प्रदान किए गए |

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी जी ने राजकोट के रेसकोर्स मैदान में एक इवेंट के दौरान करीब १८,५०० दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण प्रदान किए जो अभी तक का देशका सबसे बड़ा दिव्यांग उत्कर्ष केम्प था। जिसका वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज किया गया।

इसके अलावा प्रधानमंत्रीजी ने उद्योग साहसिको को दिव्यांगजनों का जीवन सरल बने इस लिए नए नए Innovation करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।



प्रधानमंत्रीजीने केन्द्रीय मंत्री डॉ.थावरचंद गहलोत और उनकी टीम की तारीफ की और कहा कि वे दिव्यांग बहनों और भाइयों के कल्याण के लिए जो कर रहे हैं वो ऐतिहासिक और सराहनीय है।



प्रधानमंत्री जी लोगो का अभिवादन करते हुए



वडाप्रधान श्री नरेन्द्रभाई मोदी दिव्यांगजन से बात करते हुए

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज यहां 18,500 से अधिक अलग-अलग लोगों को मदद करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों को दिया, जिससे उपयोगी उपकरणों के वितरण पर विश्व रिकॉर्ड बनाया गया। पिछले तीन सालों में 'सरकार' की मदद के लिए उनकी सरकार ने कुल 5,500 ऐसे शिविरों का आयोजन किया।



मोदी जी ने कहा कि रेसकोर्स ग्राउंड , राजकोट में आयोजित शिविर में 18,000 से अधिक दिव्यांगजनों को उपयोगी उपकरण दिए गए "हम नए विश्व रिकॉर्ड स्थापित कर रहे हैं। आज, हम एक जगह पर 18,500 दिव्यांगजन के लिए उपकरणों का वितरण करने का विश्व रिकॉर्ड बनाते हैं। मैं इसके लिए गुजरात सरकार और राजकोट ज़िले प्रशासन को बधाई देता हूं।" समारोह में, मोदी जी ने कुछ लाभार्थियों को मंच पर उन्हें फोन करके उनके साथ बातचीत करते हुए सहायता प्रदान की।



मोदी जी ने कहा कि दिव्यांग बच्चे समाज के साथ ही देश की जिम्मेदारी है, न कि सिर्फ परिवार की, जिसमें वह पैदा हुआ है। मोदी ने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपने शुरुआती उपक्रमों के माध्यम से 'दिव्यांग' के लिए नए उपकरणों के विकास के लिए आगे आएं।



दिव्यांग बच्चो को उपकरण देते हुए श्री नरेन्द्रभाई मोदी

दिव्यांग शैतु

मस्क्युलर डिस्ट्रोफी - एक मिशन



भरत शांतिलाल शाह एडवोकेट और उनके परिवारने इन्डियन मस्क्युलर डिस्ट्रोफी सोसायटी एन्ड रिसर्च सेन्टर की स्थापना सन १९८१ में मस्क्युलर डिस्ट्रोफी के दर्दीओ को लाभ मिले और यह रोग जो ओर्फन (नॉन अवेरनेस) रोग है।

इस रोग की जानकारी समाजमें अधिकतम नहीं हे , उसकी वजह से उसकी जानकारी मिले और रोगी और उनके माता-पिता को सही रास्ता मिले उसकी वजह से यह संस्था की स्थापना की गई है । इस संस्थामे करिबल ७५० दर्दी सेवाका लाभ ले रहे है ।

संस्थाको शुरू करने से पहले भरत.एस.शाह एडवोकेट के दो बच्चे नाम मिलन और तपन दोनों को मस्क्युलर डिस्ट्रोफी का रोग हुआ था , जिसकी जानकारी इस फेमिली को भी नहीं थी । बाद में रोग की गंभीरता देखकर उन्होंने अन्य उनके बच्चो की सेवा करने के उद्देश्य से यह संस्था स्थापित की । जिस फेमिली के बच्चे इस रोग के शिकार है, उनको उस समय पे सही ट्रीटमेन्ट एवं काउन्सलींग डॉक्टर्स और उनके जानकर प्रवक्ता से नहीं मिल रही थी । उसकी वजह से आर्थिक, सामाजिक और शारीरिक पीडाओ से यह सब फेमिली परेशान थे । फेमिली को भूत, भूवा और अंधश्रद्धा में फसाकर फिजुल खर्च में न रहे और सही रास्ता और दर्द की जानकारी मिले इस वजह से मानव धर्म भरत शाह ने अखत्यार किया । उनकी जो अनुभूति दो बच्चे पालने में हुई , उसके निचोड़ से उन्हें समज आया की समाज में इस रोग के शिकार वाले फेमिली का कोई स्थान नहीं है , और इस परिवार की जानकारी अलग से हो रही थी । इसलिए एक कोम्युनिटी (समूह) तैयार करनेका निर्णय लिया , और मस्क्युलर डिस्ट्रोफी के सभी बच्चो को दत्तक (एडोप्ट) करने का मानव धर्म अखत्यार कर के सेवा कार्य में एक अदभुत उदहारण यह संस्था आज भी दे रही है ।

भरत शाह के बच्चे दोनों आज नहीं है , फिर भी इस संस्था में हर शनिवार को हेल्थ एन्ड केर फाउन्डेशन (इन्दु काका सेवा संस्थान भवन),रजवाडु होटल के सामने, पवनसुत सोसायटी में दोपहर में १२-३० से ३-३० तक दर्दीओ को निःशुल्क क्लीनिकल एक्जामिनेशन और फिजियोथेरेपी,पेरेंटल काउन्सेलींग, योग, प्राणायाम की सेवा प्रदान कर रहे है । इस रोग की जानकारी के लिए २०१५ में जिन्दगी जीने का नाम (जिन्दगी जिववानु नाम) का नाटय रूपांतर, अहमदाबाद , बडौदा और मुंबई में किया है । यह साल दुसरा नाटय रूपांतर सेल्फी नामक प्रदान करने जा रहे है ।

मस्क्युलर डिस्ट्रोफी रोग के ४०० प्रकार है , उसमें सबसे अधिकतम गंभीर प्रकार डयुशन मस्क्युलर डिस्ट्रोफी है । यह डिस्ट्रोफी वाले बच्चो की जानकारी १० प्रकार से है । इसमें जन्मे १ साल तक में इसके सिमटम्स जिस बच्चे में आते है उसका डयुशन मस्क्युलर डिस्ट्रोफी कहा जाता है ।

इसके अंतरोत दर्दी की रंग सूत्रता कम होती जाती है, इसको प्रोगेसोल डिस्ीज़ कहते है और उनकी आयु बहुत कम रहती है । १५-१७ साल से ज्यादा आयु नहीं होती है । दुसरा गंभीर प्रकार है वह बेकर डिस्ट्रोफी नामक प्रकार है । इस रोग की पहचान बच्चो के आयु १२ से २० की बिच में रंगसूत्रता कम होने से शुरू होता है । जिसे बेकार डिस्ट्रोफी कहते है । तीसरा प्रकार हे लीनगर्डर नामक डिस्ट्रोफी है । यह डिस्ट्रोफी वाले बच्चो की कमर के निचे से रोग शुरू होता है और धीरे-धीरे उनको भी शारीरिक क्रियाए बंध हो जाती है । अधिकतम लिनगर्डर डिस्ट्रोफी फिमेल में होती है । यह आनुवांशिक रोग है और इसे जिनेटिक रोग भी कहते है । यह रोग थेलिसिमिया, केन्सर से भी गंभीर प्रकार का है । हर ३५०० जन्मे बच्चो में एक बच्चा इस रोग का शिकार होता है ।

आज से ३० साल पहले १,००,०००/- में एक बच्चा इसका शिकार होता था ।

सरकारने अभी इस रोग की गंभीरता समजकर इस रोग के बच्चो को दिव्यांग एक्ट में सामिल करने का निर्णय किया है । अभी इस रोग वाले बच्चे उनकी युवा अवस्था में कमाने की शक्ति रखते नहीं है और आर्थिक एवं शारीरिक असमर्थ होते है । इन बच्चो के जीने का सहारा बननेका सरकार को सोचना चाहिए ।

यह संस्था का विज्ञानं , इन बच्चो के लिए डे-नाईट केर युनिट शुरू करने का है , और उसमे जितने भी बच्चे इस रोग के शिकार है उनको वहा ही इकठ्ठा रखकर सभी बच्चो को मनोरंजन, खेलकुद और एज्युकेशन देने का प्रबंध करने की सोच है । इस दिशा में यह संस्था आगे बढ़ रही है ।

समाज का और समाज में जो इंडस्ट्रीयालिस्ट व्यापारी वर्ग है , उनके योगप्रदान की संस्था आशा रखती है । संस्थाने आज २८ साल पूरे किये है , और अगले सितम्बर २०१७ के इतवार के दिन रात को ८-३० को सेल्फी नामक नाटय प्रदान करने का आयोजन किया है । आपका योगदान आवकार्य है ।

संस्था इन्कमटेक्ष का ८०-जी का सर्टिफिकेट रखती है ।

आभार ।

आपके आस-पास अगर कोई भी दिव्यांग व्यक्ति है तो उन्हें हमेशां मददरूप बनने का प्रयत्न करे एवं हमारी संस्था का संपर्क करे ।

"दिव्यांग सेतु" मेगेजिन के अगले अंक में चित्र स्पर्धा के परिणाम घोषित किए जाएंगे ।

दिव्यांग शैतु

एक अनोखी पहल



१० साल की
दिव्यांग बच्ची
जाएगी अमरिका,
एक अमरीकी
दंपति ने
उसे लिया दत्तक

कहा जाता है की जब इश्वर महेरबान होती है तब किस्मत खुल जाते है , बिलकुल एसा ही गुजरात के एक शहर राजकोट में हुआ । १० साल की एक अनाथ दिव्यांग लड़की का माता-पिता कोन है वो किसी को पता नहीं था । उस लड़की का भरण-पोषण काठियावाड़ बालश्रम में हो रहा था और अचानक ही इस बच्ची की दत्तक (एडोप्ट) करने अमरिका से एक दंपति आ पहुंचा । इस बच्ची का जन्म कहा हुआ वो किसी को पता नहीं था लेकिन , उस बच्ची का उछेर अमरिका में होगा वो नक्की था । इस बच्ची के पैर में घुटने से निचे का भाग जन्म से ही कम नहीं कर रहा हैं ।

लिज़ा जोसेफ और फिलिप जोसेफ नाम का अमरीकी दंपति

प्राप्त विवरण के अनुसार, राजकोट के काठियावाड़ बालाश्रम में 10 महीने की दिव्यांग बच्ची दूर्वा को दत्तक लेने लिज़ा जोसेफ और फिलिप जोसेफ नामक अमेरिकी दंपति आए हैं। इस दंपति अमेरिका के मिशिगन राज्य की जिलेन्ड्स शहर में रहते हैं । अमेरिकी दंपति दूर्वा का नाम बदलकर ओमेला रखेंगे ।

पांच महीने पहले फोटो देखकर चयन की गई थी

बच्ची को दत्तक ले जाने की प्रक्रिया ऑनलाइन हो गई है। पांच महीने पहले इस बच्ची को फोटो में देखकर यह अमरीकी दंपति ने पसंद किया था । सभी कानूनों के विधी पूर्ण करने की बाद बच्ची को इस दंपति को सौंप दिया गया है। लड़की को दत्तक लेकर दंपति बहुत खुश नजर आ रहे थे ।

दिव्यांगों के लिए स्माइल ईयर
 दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक
 अंकार फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से
 क्रिस्टल डेन्टल केयर (डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल)
 दिव्यांगों व शहीद सैनिकों के जरूरतमंद परिवारों के लिए
 निःशुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है



मंत्र युगपरिवर्तक प. पू. संतश्री ऋषि भितेशभाईना
 आशिर्वाद अने मार्गदर्शनथी शरु थयेल...



KRYSTAL DENTAL CARE

MULTISPECIALTY DENTAL CLINIC
 DIGITAL SMILE DESIGN AND IMPLANT CENTRE

180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol Pump,
 Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad - 380015

Clinic : 079 - 48008004



Dr. Shashwat Jain
 +91 99786 01890

M.D.S. - Prosthodontics (Manipal)
 PGCOI - Implant Specialist
 DSD - Digital Smile Design

TIMINGS :
 10.00 am to 08.00pm

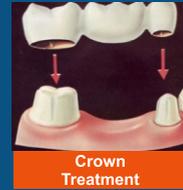
श्री पी. सी. जैन
 चार्टड ओकॉन्टिन्टनी
 छत्रछायामां चालती...

होतना तमाम हर्षोलुं
 ओकमात्र
 समाधान स्थान ओटले...
**क्रीस्टल
 डेन्टल केर**



Before

After



Crown
 Treatment



Digital
 Smile Designing



Implant
 Treatment

**Consultant Prosthodontist
 & Implantologist**

- **Maxillofacial Prosthetics**
 Cancer Rehabilitation
 Trauma Rehabilitation
- **Implant Rehabilitations**
- **Digital Smile Designing**
- **Full Mouth
 Rehabilitations**
- **Crowns & Veneers**
- **Full & Partial Dentures**

WHAT WE DO:

- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns and Veneers
- Prosthetic replacements
 (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for Kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG Facility available
Pick up & Drop Facility for Senior Citizens

Website : www.krystaldentalcare.com | Email: drs@krystaldentalcare.com